

ओ गरीब नवाज़ मेरी बांह फड़ ले

(गुरु गोबिंद देवे खड़े, काके लागु पाए ।
बलिहारी गुरु आपटे,
जिन गोबिंद दीओ मिलाए ॥)

ओ गरीब निवाज, मेरी बांह* फड़ु लै xII-॥
मेनुं, पार करन दी*, हाभी भर लै ॥,
ओ गरीब निवाज, मेरी बांह* फड़ु लै xII-॥

जिन रागीं, मेरा सतिगुरु आवे,
उस राह फुल विढावां* ।
चरन कमल दी, पुल लै के,
मसतक उति लावां* ॥
जे तेरी किरपा, हेवे सतिगुरु* ॥,
दिल दा हाल सुटावां,
ओ गरीब निवाज, मेरी बांह,,,,,,,,,,,,,

आपटे, सति गुरु लयी, हिरदे पलीय विढावां* ।
पलकां दी में, मेज बटाके, फुलां नाल सजावां* ॥
जे तेरी किरपा, हेवे सतिगुरु* ॥,
पर विंच दरसन पावां,
ओ गरीब निवाज, मेरी बांह,,,,,,,,,,,,,

आपटे सति, गुरु दे दवारे, वेखे अजब नजारे* ।
भव सागर तें, डुबदे जांदे, लखां पापी तारे* ॥
जे तेरी किरपा, हेवे सतिगुरु* ॥,
भव सागर तर जावां,
ओ गरीब निवाज, मेरी बांह,,,,,,,,,,,,,

चारों केने, चिकड़ भरिआ, किस तरुं में पेवां* ।
साबन बेड़ा, मेल वधेरी, बैठ किनारे रेवां* ॥
जे तेरी किरपा, हेवे सतिगुरु* ॥,
पल विंच उजली हेवां,
ओ गरीब निवाज, मेरी बांह,,,,,,,,,,,,,

अपलेडर- अनिलरामूरतीडेपाल

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/29394/title/oh-gareeb-nawaz-meri-baah-fad-le>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |